SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जन शिक्षकों की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ. सीमा कुशवाह,
ग्वालियर, जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
डॉ. सीमा कुशवाह,
ग्वालियर, जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/12/2019
Revised on : -----
Accepted on : 20/12/2019
Plagiarism : 05% on 18/12/2019

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

Date: Wednesday, December 18, 2019
Statistics: 75 words Plagiarized / 1640 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

'kS{kf.kd leL;kvksa ds lek/kku esa tu f'k{kdksa dh Hkwfedk % ,d v/;;u izLrkouk % thou dh pqukSrh ls fucVus dk ,d ek= rjhdk gSA ml loksZP; 'kfDr dk gkFk Fkkeuk tks thou dh lcls dfBu ?kfM+;ksa esa mcjusa esa vkidh enn djsaA bldk lcls egRoiw.kZ lk/ku gSA xq: vkSj xksfoUnA fdlh Hkh ns'k dh mUufr esa f'k{kk dk egRoiw.kZ ;ksxnku gSA f'k{kk dsoy orZeku ls orZeku dh ;k=k ugha gSA] cfYd og vrhr ls Hkfo"; rd dk ,slk ekxZ gSA ftls orZeku ds iqy ij ls xqtjuk gksrk gSA lH;rk ds fodkl ds lkFk&lkFk f'k{kk us fodkl dh izfØ;k esa loksZP; LFkku izkIr fd;k gSA f'k{kk ,d ,slh izfØ;k gS] tks thou i;ZUr pyrh gSA blfy, izR;sd

प्रस्तावना :–

जीवन की चुनौती से निबटने का एक मात्र तरीका है। उस सर्वोच्य शक्ति का हाथ थामना जो जीवन की सबसे कठिन घड़ियों में उबरने में आपकी मदद करें। इसका सबसे महत्वपूर्ण साधन है। गुरू और गोविन्द। किसी भी देश की उन्नति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा केवल वर्तमान से वर्तमान की यात्रा नहीं है, बल्कि वह अतीत से भविष्य तक का ऐसा मार्ग है। जिसे वर्तमान के पुल पर से गुजरना होता है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ शिक्षा ने विकास की प्रक्रिया में सर्वोच्य स्थान प्राप्त किया है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गुरू और गोविन्द की आवश्यकता होती है। जो कि अपने आदर्शों एवं मूल्यों से विद्यार्थियों का सही मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है जन शिक्षकों की शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में भूमिका ज्ञात करना।

मुख्य शब्द :–

जन शिक्षक, शैक्षणिक समस्याएं एवं समाधान

शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानंद ने कहा है – ''शिक्षा एक राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक हैं, यदि आप किसी देश के उन्नयन एवं अवनयन का काल जानना चाहते हैं, तो इसे उस देश की शिक्षा के इतिहास में खोजिये ।''

मनुष्य के विकास की अवस्थाऐं जैसे – जैसे बदलती रहीं शिक्षा का उद्देश्य और विकास भी बदलता गया। किसी काल में शिक्षा चरित्र निर्माण के लिये रही है। तो किसी काल में ज्ञान के लिये और किसी समय उसे अर्थोपार्जन का साधन माना

गया तो किसी समय अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का उद्देश्य होकर रह गया।

इस प्रकार आज के परिवेश में बदलते हुए मानव मूल्यों के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत से परिवर्तन हुए है। शिक्षा बालक/बालिका के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अपने सद्भावों के सॉचें में ढ़ालती है। और उसे संसार के समक्ष एक पथ पर तैयार सजीव नागरिक के रूप में प्रस्तुत करती है, जो कि अपने विचारों और कार्यो से समाज को उत्थान की दिशा में अग्रसर कर सकता है। मानव के इतिहास में शिक्षा, मानव समाज के विकास के लिये एक सतत् क्रिया और आधार रही है। मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा ज्ञान और कौशल दोनों ही क्षमताओं के विकास के माध्यम से शिक्षा, लोगों को बदलती हुयी परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिये उन्हें शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है। एवं सामाजिक विकास के लिये प्रेरित करती है। तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।

इतिहास से ज्ञात होता है, कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गयी भूमिकाऐं महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। वस्तुतः मानव संसाधनों का विकास शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है, जिसका आधारीय स्तर प्राथमिक स्तर की शिक्षा है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्त्ता ने प्राथमिक स्तर पर शैक्षणिक समस्याओं को हल करने में जनशिक्षकों के प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया है। तथा इसके द्वारा यह जानने की कोशिश की है, कि प्राथमिक स्तर पर शैक्षणिक समस्याओं के निवारण में जनशिक्षकों का सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हुआ है, अथवा नहीं। इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयत्न किया गया है।

मानव समाज की आवश्यकताऐं अनन्त है। आवश्यकता पूर्ति का क्रम मानव समाज में निरंतर काल से गतिशील है। शिक्षा की आवश्यकता मानव को भोजन से भी अधिक होती है। अतः ज्ञान के विकास हेतु अनुसंधान अत्यावश्यक है, और यह ज्ञान का विकास जीवन के विकास के लिए अत्यावश्यक है।

विद्यालय शिक्षा आयोग का मत है कि अनुसंधान के बिना अध्ययन मृत प्रायः हो जायेगा। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि ''शिक्षित मनुष्य अशिक्षित मनुष्यों से उतने ही उच्च हैं, जितनें कि मृतकों से जीवित।'' अरस्तु के उपर्युक्त कथन से यह विचार सिद्ध होता है कि शिक्षा मानव जीवन में संजीवनी शक्ति का संचार कर उसे जीवन्तता प्रदान करती है। शिक्षा के व्यापक एवं पूर्ण प्रचार–प्रसार हेतु देश के प्रत्येक बच्चे को विद्यालय तक लाना तथा उन्हें गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना अति आवश्यक है बच्चों का विद्यालय से बाहर रहना शिक्षा के विकास में एक समस्या है। अतः इस समस्या के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का अन्वेशण व निदान करना आज के शैक्षिक अनुसंधान का प्रमुख प्रतिवाद है।

मध्यप्रदेश शासन लगातार ऐसी अनेक योजनाऐं प्राथमिक स्तर के बच्चों की शिक्षा में सुधार व गुणवत्ता लाने के लिए लागू करता आ रहा है, क्योंकि बालक हमारे देश के भावी कर्णधार हैं तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि हमारे देश के विद्यालयों में हमारे भविष्य का निर्माण हो रहा है। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का मूल अधिकार है। किंतु प्राथमिक स्तर की शिक्षा का लोकव्यापीकरण मात्र जिले की नहीं देश और प्रदेश की भी समस्या है। प्राथमिक शिक्षा के विकास पथ में सर्वशिक्षा अभियान संसाधनों की दृष्टि से एक बड़ा भारी पग है। जो जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का उत्तरार्द्ध हैं। इस सम्पूर्ण अभियान में जनशिक्षा केन्द्र प्रशासनिक और अकादमिक दोनों दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण आरंभिक इकाई है।

अकादमिक दृष्टि से जन शिक्षक की एक समन्वयक के रूप में महत्वपूर्ण एवं उत्तरदायी भूमिका है। अतः जनशिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह प्राथमिक स्तर के बालकों की भावनाओं, संवेगों, रूचियों आदि को भली प्रकार समझेंगे। तथा मनोवैज्ञानिक शिक्षण पद्धतियों को अपनाकर उनकी शिक्षण समस्याओं को दूर करने का भली प्रकार प्रयास करेंगे।

जनशिक्षक क्या अपनी भूमिका में खरे सिद्ध हो रहे हैं। क्या जनशिक्षक शैक्षिक समस्याओं के

निराकरण में सहायक है शिक्षा के विकास में जनशिक्षकों की क्या उपयोगिता है यह जानना अत्यंत आवश्यक है। इस अध्ययन के फलस्वरूप शैक्षणिक समस्याओं के निराकरण में जनशिक्षक उपयोगी भूमिका निभा पा रहा है। या नहीं, यह पता लगाया जा सकेगा। बल्कि उनकी इस भूमिका के प्रभावी निर्वहन में क्या बाधायें हैं। तथा उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। इस बारें में तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। इस तरह यह अध्ययन प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को हल करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य :–

1. प्राथमिक विद्यालयों में जन शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जन शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जन शिक्षकों की भूमिका सार्थक नहीं होती है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि को चुना गया है।

न्यायादर्श की प्रक्रिया :–

शोधकर्त्ता द्वारा शोधकार्य में प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में कार्यरत 20 जनशिक्षको तथा सम्बन्धित विद्यालयों से 100 शिक्षकों का चयन किया गया है। इसके पश्चात् अनुसंधानकर्त्ता ने क्षेत्र विशेष में विद्यालयों का सर्वेक्षण किया। साथ ही विद्यालय में शिक्षकों, जनशिक्षकों, की स्थिति का सर्वेक्षण किया। इसके पश्चात् अनुसंधानकर्त्ता ने न्यादर्श प्रक्रिया अपनाई। न्यादर्शन प्रक्रिया में उचित न्यादर्श का चयन किया। उचित न्यादर्श पर मानकीकृत प्रश्नावली को प्रशासित किया। यह समस्त कार्य शोद्यार्थी ने स्वविवेक एवं पूर्ण जिज्ञासा के साथ किया।

जनशिक्षकों के लिए प्रश्नावली का निर्माण :–

शिक्षकों के शैक्षिक समन्वय को ध्यान में रखकर प्रश्नावली में विभिन्न उद्देश्यों से संबंधित अनेक प्रश्नों का समावेश उचित अनुपात में किया गया है।

- प्रश्नावलियों में सभी प्रश्न बहुविकल्पी प्रकार के है।
- प्रश्नावलियों में प्रश्नों की संख्या 30 रखी गयी है।
- प्रश्नावली तैयार कर, उसकी जाँच की गयी तथा त्रुटियों का निवारण कर पुनः लिखी गयी, तत्पश्चात् 20 प्रतियाँ जनशिक्षकों तथा 100 प्रतियाँ शिक्षकों के लिए प्रिंट करायी गयी।

परीक्षण का विवरण :–

जनशिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वयं विद्यालयों में जाकर जनशिक्षकों तथा शिक्षकों प्रश्नावलिया वितरित की गयी तथा दोनों को समान अर्थात् निम्नांकित निर्देश दिये गये :–

1. शिक्षकों/जनशिक्षकों को प्रश्नावली के प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम, पद, लिंग, आयु, शैक्षणिक/व्यावसायिक योग्यता लिखनें के निर्देश दिये गये।
2. वितरित प्रश्नावली के प्रथम पृष्ठ पर अंकित निर्देशों को शिक्षकों को पढ़ने के निर्देश दिये गये तथा निर्देशानुसार कार्य करने को कहा गया।

3. शोधकर्ता ने स्वयं वहा उपस्थित रहकर शिक्षकों/जनशिक्षकों से वितरित की गयी प्रश्नावली को भरवाया भरवानें के बाद उनका संग्रह किया गया, संग्रह करने के बाद मेन्युअल के आधार पर इनका मूल्यांकन किया गया, इसके बाद इनका सारणीयन किया गया।

सांख्यिकीय विधियां :–

प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों को प्रतिशतांक के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

निष्कर्ष :–

परिकल्पना :–

''शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जन शिक्षकों की भूमिका सार्थक नहीं होती है''

जनशिक्षकों एवं शिक्षकों से प्राप्त प्रदत्तों के संग्रह एवं विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक, समस्याओं के समाधान में जनशिक्षकों की भूमिका सार्थक होती है। प्रदत्तों के विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश जन शिक्षक शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं। परिकल्पना असत्य प्रमाणित होती है। इसलिए इस परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जनशिक्षकों की भूमिका सार्थक होती है।

शिक्षण ऐसा कार्य जिसमें शिक्षक के ऊपर बहुत बड़ा दायित्व होता है। शिक्षक विद्यार्थियों को अध्ययन कराने के साथ–साथ अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न होता है। वह हमेशा चाहता है कि विद्यालय एवं विद्यार्थियों को कोई समस्या न हो इसके लिए वह पूरे मनोयोग से अपने दायित्व का निर्वहन करता है। प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह तथ्य सामने आये कि शैक्षणिक, समस्याओं के समाधान में जनशिक्षकों की भूमिका सार्थक होती है।

सुझाव :–

जनशिक्षकों हेतु सुझाव :–

1. जनशिक्षकों को बच्चों की प्रगति जानने के लिये विद्यालय में शिक्षकों से सम्पर्क करते रहना चाहिए।
2. पालकों, समुदाय आदि से जनशिक्षकों को समय–समय पर सम्पर्क कर अपने आस–पास के अप्रवेशी बच्चों को विद्यालय में लाने हेतु सहयोग प्राप्त करना चाहिए।
3. जनशिक्षकों को शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करनें के लिए उनके प्रति उचित सहयोगात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।
4. जनशिक्षकों को शिक्षकों की विद्यालय सम्बन्धी, प्रशासन सम्बन्धी तथा छात्रों सम्बन्धी समस्याओं को हल करनें में सदैव दिशा निर्देशन देते रहना चाहिए।
5. जनशिक्षकों को शिक्षकों के ज्ञान में वृद्धि कराने हेतु उन्हें नवीनतम शैक्षणिक विधियों, परिवर्तनों तथा तकनीकों का ज्ञान करानें के लिए उचित कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिए।

शिक्षकों हेतु सुझाव :–

1. शिक्षण को रूचिपूर्ण बनाने हेतु टी.एल.एम. का प्रयोग किया जाना चाहिये।
2. विद्यालयों में स्वच्छता तथा पेयजल एवम् शौचालय की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. शिक्षकों को सैद्धांतिक पक्ष के साथ–साथ व्यावहारिक पक्ष पर भी बराबर ध्यान देना चाहिए।
4. शिक्षा विभाग द्वारा समय–समय पर आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण–कार्यक्रमों की जानकारी हेतु जनशिक्षकों से सम्पर्क कर उनमें सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

संदर्भ सूची :–

1. *राय, पारसनाथ, (2004), अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ।*
2. *अस्थाना, विपिन, अग्रवाल रामनारायण, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीन संस्करण ।*
3. *भार्गव महेष, (1999), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन बारहवाँ संस्करण, एच.पी. भार्गव, बुक हाउस आगरा–2 ।*
4. *चौबे, एस.पी., (1975), भारतीय शिक्षा, उसकी समस्यायें, प्रवृतियों और नवाचार, लॉयक बुक डिपो, कॉलेज रोड मेरठ ।*
5. *श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन., वर्मा डॉ. प्रीति, (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।*

****